International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746, Impact Factor: RJIF 5.34
www.alleducationjournal.com
Volume 1; Issue 10; October 2016; Page No. 54-55

रविन्द्रनाथ का संवेदनीय प्रभाव : निराला की अभेद्यदृष्टि पर

डा. सुदर्शन राठी

ऐसोशिएट प्रोफेसर हिन्दी, महाराजा अग्रसेन महिला महाविद्यालय, झज्जर, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

जीवन और साहित्य के क्षेत्र में रवीन्द्र और निराला ने जिस साहस और पौरुष का परिचय दिया था उनकी नींव उनके प्रारम्भिक जीवन की कुछ घटनाओं ने डाल दी थी। टैगोर की स्मृतियों को अप्रत्यक्ष रूप प्रदान करने हेतु महिषादल में बालक (निराला) अपने पैरों पर खड़ा होने का अभ्यास कर रहा था। बँगला भाषा का लालित्य और मिठास देनों के काव्य का मूलाधार रही है। महिषादल में निराला का कलाकार चैतन्य हो गया था और बांसवाड़े की सम्पन्नता पाकर वह और प्रखर हुआ। ''निराला का बाल्यकाल गढ़ाकोला और महिषादल में बीता। निराला में बांसवाडा की ढृढता, पौरुष, अक्खड़ता और स्वाभिकता तथा बँगला में बांसवाड़ा की दृष्टि, अक्खड़ता और स्वाभिमान तथा बँगला की सरलता, तरलता एवं सरसता का अद्भुत चित्रण, गढ़ाकोला एवं महिषादल दोनों को ही देन थी।''[1]

बचपन के अनेक आघातों से जिस प्रकार रवीन्द्र मजबूत हुए थे उसी प्रेरक बिन्दु की स्थिति तक निराला कहीं न कहीं मजबूत होते रहे। इनकी अति संवेदनशीलता ही आगे चलकर काव्य सिद्धियों के रूप में व्यक्त हुई है क्योंकि महापुरुषों के जीवन में जो कुछ भी घटित होता है वह उनकी कला अभिव्यक्ति का सार तत्व होता है। छायावादी काव्य और निराला पर गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के प्रभाव की सर्वाधिक चर्चा हुई अतः उस युग के परिप्रेक्ष्य में टैगोर के व्यक्तित्व और कृतित्व को विशेष रूप से देखना प्रासंगिक होगा।

जिस समय निराला का कवि आधुनिक हिंदी काव्य का महाप्राण बनने की ओर वेगवान था, उस समय टैगोर सम्पूर्ण भारत में ही नहीं वरन् विश्व स्तर तक कवि के रूप में स्थापित हो चुके थे। आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक आन्दोलनों का सार तत्व लेकर इन्होंने कविता को पुरानी रूढ़ियों से निकाल कर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर कर दिया था और अंग्रेजी के स्वच्छन्तावादी काव्य की तरह बँगला में भी नयी शैली का प्रारम्भ किया था। काव्य विधा को इन्होंने जो नयी गीतात्मक शैली दी उसने भारतीय काव्य को बहुत प्रभावित किया। इन्होंने पौराणिक संस्कृति को काव्य में व्यक्त किया। इसलिये वे सांस्कृतिक जागरण के महान् अग्रदूत और नये राष्ट्रीय गौरव के संस्थापक माने जाते हैं।

रवीन्द्रनाथ टैगोर अपने युग के महान चेत्ता थे। देश प्रेम से लेकर अतिलघु मानव तक के प्रति उनकी करुणा इनके काव्य में व्यक्त हुई है। इनके बहुआयामी व्यक्तित्व ने सभी ललित कलाओं को प्रभावित किया। कलाएं तो इन्हें सिद्ध थी, ये अपने युग के काव्य पुरुष तो थे ही साथ ही साथ संगीत, नाटक, चित्रकला आदि सभी में ये पारंगत थे। इनका व्यक्तित्व भी बहुत गरिमामय था। काव्य जगत् में इनकी गीतांजलि की बहुत चर्चा हुई, संगीत में रवीन्द्रनाथ टैगोर संगीत आज भी अपना विशेष स्थान रखता है। जीवन के अन्तिम चरण में काव्य लिखना बन्द करके इन्होंने जो चित्रण किया वह आज भी आधुनिक कला के लिये एक कीर्तिमान है। निराला का प्रारम्भिक काल बंगाल में ही बीता। अतः इस काव्य शिखर की ओर उनका ध्यान जाना स्वाभाविक था। जहाँ तक प्रेरणा और प्रभाव लेने की बात है सो युगपुरुष दूसरों की प्रेरणा से अपने अन्दर निहित शक्तियों को ही जागृत करते हैं। फिर निराला ने अपना अधिकतर निर्माण स्वयं ही किया है, उनके मानसिक विभाग बड़े प्रखर थे, अनेक विलक्षण गुणों के साथ–साथ उनमें सीखने और अध्ययन करने की अद्भुत क्षमता थी। ''निराला जी अंग्रेजी ही नहीं, संस्कृत, बँगला, हिन्दी और उर्दू की जिन रचनाओं को धोखना शुरू करते है, उसमें पानी निकाल कर ही छोड़ते हैं। 'कुमारसम्भवम्' पढ़ते थे तो श्लाकों को कॉपी में उतार लेते थे। कोई भी संस्कृत जानने वाला मित्र या साहित्य प्रेमी मिलता, तो उन्हीं की चर्चा करते। इसी तरह 'मेघदूतम्' का भी उन्होंने अध्ययन किया था। आगे चलकर उर्दू गजलों को भी उन्होंने यही गति की।[2] इसी क्रम में निराला जी ने रवीन्द्र साहित्य का भी मंथन किया और उसके लालित्य, नूतनता और ध्वनि आदि के सूक्ष्म तत्व निकाल लिये जो उनके काव्य में अपने मौलिक ढंग से व्यक्त हुए। निराला ने टैगोर को अपना आदर्श माना है, इसकी काव्य जगत् में बहुत चर्चा हो चुकी है। उनके प्रेरणा लेने के भी विचित्र दृष्टिकोण थे, जहाँ वे किसी से प्रेरणा लेते थे वहीं वे अपनी छवि भी उसी में देखने का प्रयास करते थे और जब संगत नहीं बैठती थी तो विद्रोह कर देते थे और अन्त में अपना ही विस्तार करते थे। निराला जी ने अन्ध प्रेरणा किसी से भी नहीं ली यही उनके पौरुष का प्रतीक है। वे केवल सार–सार को ही ग्रहण करते थे, इसलिये जहाँ वे गुरुदेव के काव्य से प्रभावित थे वही उनके अभिजात्य और सुरक्षित प्रभा मण्डल के प्रति विद्रोही भी थे। हिन्दी की उपेक्षा और टैगोर की प्रशंसा पर एक बार निराला जी ने गांधी जी से कहा था – ''मैं यानी आप रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसा साहित्यिक हिन्दी में नहीं देखना चाहते, प्रिंस द्वारकानाथ ठाकुर का नाती या नोबेल पुरस्कार प्राप्त मनुष्य देखना चाहते है।''[3] यह कथन इनकी ईर्ष्या और उनके काव्य के प्रति चुनौती नहीं थी वरन् उनके अभिजात्य और गुरुडम के प्रति विद्रोह था और टैगोर में निराला देखने का प्रयास था।

गुरुदेव के रहन सहन की एक विशिष्ट अभिजात्य शैली थी, जिससे उनका व्यक्तित्व ओत प्रोत था वे अपनी महानता और महिमा के प्रभा मण्डल से कभी बाहर नहीं निकलते थे और बड़े राजनेताओं के साथ सदैव आगे ही चलते थे, अति सम्मानजनक होने के नाते वे बहुत ही कम लोगों से घुलते मिलते थे। अपनी वेशभूषा से भी वे बहुत महिमामय दिखते थे। इसके विपरीत निराला जी के सारे कार्यकलाप सामान्य जन के साथ घुल मिलकर होते थे, इससे भी आगे बढकर सड़कों पर नंगे पाँव चलते–चलते कभी किसी वृद्धा भिक्षुणी के पास रूकते, 'माँ' कहकर सम्बोधित करते और द्रवित होकर सारे पैसे निकाल कर दे देते 'पण्डित निराला मेहतरानी को अपनी बिटिया कहा करते थे और जब कभी उसकी बूढी सास आती तो बड़े आदर से उसे सुरती बनाकर देते थे। एक दिन वह प्यासी थी। निराली जी लोटा भरकर पानी आंगन से ले आये और उसे ऊपर से जल पिलाते हुए कहने लगे कि यह लोटा कमलाशंकर का है नहीं तो मैं इसे तुम्हारे हाथ में दे

देता। ऊपर से जल पिलाने में उनको बड़ा ही संकोच हो रहा था।[4]

टैगोर को अभिजात्य संस्कार और अनन्त सुविधाएँ प्राप्त थी उन्हें देश–विदेश भ्रमण के लिये कोई असुविधा नहीं थी, इसके विपरीत निराला ने सामान्य स्तर और घोर असुविधाओं में अपने व्यक्तित्व का विकास किया, इनकी सौन्दर्य दृष्टि युग के किसी कवि या कलाकार से कम नहीं थी, अपने जमाने के मढ़ाकोला की परिस्थितियों से ही इन्होंने जिस मानवीय संवेदना का विकास किया वह बेजोड़ है। यह वही मानवीय संवेदना है जिसे निराला ने बचपन में टैगोर में देखी थी। मार्क्स,गोकीं, टैगोर और प्रेमचन्द के चिन्तन को इन्होंने गढ़ाकोला में ही सिद्ध किया। अमृतलाल नागर जी ने अपने संस्मरणात्मक पुस्तक 'जिनके साथ जिया' में निराला जी के सम्बन्ध में बड़े ही मार्मिक संस्मरा लिखे हैं ''गढाकोला में पहली निराली जयन्ती'' के अवसर पर ''जुलुस और आगे बढ़ा।'' निराला बाबा की जय के नारे और शंख घंटा धड़ियालों का नॉद इस समय अपने पूरे जोर पर था। किनारे पर पड़ी एक मड़ैया के आगे खड़ा हुआ एक वृद्ध बार–बार अपनी आँखे पोछने लगा। गढ़ाकोला के एक सज्जन ने बताया कि वह पासी निराजी के पास बहुत आया जाया करताथा। इस पर हठात मेरे मन में बात आयीं। छोटी कौम कहलाने वाले दबे–पिसे लोग ही निराला जी के नाम पर रोने वालों में यहाँ अधिक हैं।.... मैं सोचने लगा कि वे लोग भला निराला को क्यों याद रखे। निराला जी ने उनकी जातिगत उच्चता को कभी स्वीकार नहीं किया। उनके झूठे धर्म को सदा लातों से ठुकराया। गरीब मजलूमों की आवाज सुनी। उनके लिये ताकत वरों से जूझे। उनके सुख–दुःख में शामिल हुए, यही वजह है जो यह इतनी बड़ी भगत मण्डली इस जुलूस में ऊँची जाति वालों की संख्या को मात देती हुई आगे बढ़ रही है। मुझे बड़ा अच्छा लग रहा था। शिव अपने भूत गणों के साथ ही शोभित होते हैं।[5] यहाँ निराला के सौन्दर्यदर्शन का मूर्तरूप मिलता है। मरणोपरान्त उनकी इस प्रथम जयन्ती पर श्रद्धांजलि देने के लिये उनकी करूणा, दया, मानवता, सरलता और समदृष्टि, पात्रों के रूप में एकत्रित थे, यहीं उनके काव्य और साधना के आधार थे, यही उनके वास्तविक प्रेरणानायक थे। अर्थात् निराला के संस्कार, टैगोर की ललित भावना से ओत प्रोत हो जो प्रत्यक्ष नहींतो अप्रत्यक्ष प्रभाव को बिखेर रहे थे। दोनों ने ही महानगरों से ग्रामीण स्तर तक की संस्कृति और समाज को अपनी अभेद्य दृष्टि से देखा।

अन्त में यह कहा जा सकता है कि रवीन्द्रनाथ का संवेदनशील कवि – चित्रकार निराला के अन्तस में व्याप्त था। उनके अचेतन मन में जहाँ युग की विसंगतियों के द्वन्द्व थे तो वहीं उनके अचेतन में प्रचलित जाति गौरव समाहित था।

टैगोर की आध्यात्मिक दृष्टि का विस्तार हमें निराला के साहित्य में स्पष्ट दृष्टिगत होता है। अर्थात् दोनों अपने–अपने युग के महानायक थे।

धन्यवाद।

संदर्भ ग्रंथ सूचि

1. निराला, सं. इन्द्रनाथ मदान, पुस्तक के निबन्ध ''जीवनी और व्यक्तित्व'' लेखक –भागीरथ मिश्र, पृ. 10।
2. निराला –डॉ. रामविलास शर्मा, पृ. 26।
3. निराला – सं. इन्द्रनाथ मदान, पुस्तक के निबन्ध ''जीवनी और व्यक्तित्व'', लेखक –भागीरथ मिश्र, पृ. 17।
4. निराला और कवि श्री, प्रो. सेवक वात्स्यायन, पृ. 86–87।
5. 'जिनके साथ जिया' : अमृत लाल नगर, पृ. 43।